कश्मीर की विशेषता

जब से मैं कश्मीर में आया हूँ, तभी से यह कह रहा हूँ कि ये मसले सियासत से हल होनेवाले नहीं हैं, रूहानियत से हल होनेवाले हैं। सियासत से दिमाग उलझेंगे। यहाँकी सब सियासी पार्टियों के साथ हमारी बातें हुई हैं। खुशी की बात है कि किसी भी जमात ने अपना दिल हमसे छिपाया नहीं। चाहे वह प्रजा-पार्टी हो, महाज रायशुमारी हो, पॉलिटिकल कान्फ्रेंस हो, डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस हो या नेशनल कान्फ्रेन्स हो। सभीने अपने खयाल हमारे सामने दिल खोलकर रखे। वे यह जानते हैं कि यह शख्स सबका भला चाहता है, इसलिए यह गैरजानिबदारी से नेक सलाह देगा। खिलाफ राय जाहिर करेगा भी तो भला ही चाहेगा। ऐसे यकीन से जमातों ने और अनफरदा शख्सों ने भी हमसे बातें कीं। इसलिए मैं कश्मीर से वाकिफ हो सका।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ और मुझे महसूस हुआ कि यहाँ-की कुदरत खूबसूरत है, यहाँके लोग खूबसूरत हैं और यहाँका दिल भी खूबसूरत है। यहाँकी हवा ठंडी है और यहाँका दिमाग भी ठंडा है। यहाँ भाईचारा भी है और आपस-आपस में प्यार भी है। यहाँके लोग फसाद करने में नाकामयाब होंगे और प्यार बढ़ाने में कामयाब होंगे। यह सिफत, यह कूवत, गुण यहाँके लोगों में है। ये गुण पुराने जमाने से चले आये हैं। यहाँ हजारों सालों से एक तमद्दुन चली आयी है। डोहलम (झेलम), चिनाव आदि नदियों के किनारे इन्सान दस हजार सालों से बसा है। इनके किनारे अच्छे-अच्छे खयाल सूझे हैं। इन्हीं नदियों के किनारे हजारों ऋषि-मुनियों ने तपस्या की है। उनकी औलाद यहाँ है। इसलिए यहाँ प्यार करने की सिफत है, झगड़े करने की नहीं। कुछ लोग झगड़े करनेवाले तो होते ही हैं, वैसे सारी दुनिया में हैं और यहाँ भी हैं। पर मूल में यहाँके लोगों का स्वभाव झगड़ा करने का नहीं है।

तहरीक की बुनियाद

अभी हमारे स्पीकर साहब ने कहा कि यहाँके लोग पहाड़ों में बसे हैं और यहाँ जमीन बहुत कम है, इसलिए यहाँ इस तहरीक की जरूरत नहीं है। लेकिन मेरा कहना यह है कि यहाँ जो भी जमीन है, आप उसकी मिलकियत छोड़ें। अगर यहाँकी जमीन की कीमत ज्यादा नहीं है तो आपको उसकी मिलकियत छोड़ना और भी आसान है। जमीन का मालिक अल्लाह है, हम नहीं। हम तो मुट्ठीभर मिट्टी भी पैदा नहीं कर सकते हैं। हवा और पानी का कोई मालिक नहीं हो सकता है, वैसे ही जमीन का भी कोई मालिक नहीं हो सकता है। इसलिए जमीन की मालकियत छोड़ें। सारा गाँव एक बनायें। गाँव की ताकत बनेगी तो दुनिया की जो मुश्किलें दीखती हैं, उनसे नजात मिलेगी। इधर दुनिया और उधर गाँव रहे। ज्यादा ताकत, ज्यादा सत्ता गाँव में रहे और दुनिया के मरकज में अखलाखी ताकत रहे।

आज छोटे-छोटे मरकजों में ज्यादा ताकत है, इसलिए कराची, श्रीनगर दिल्ली में ज्यादा ताकत है। वहाँ चंद लोगों के हाथ में सारी ताकत रहती है तो वे लोग कितने भी भले व नेक हों, लेकिन उनके लिए भी सबका भला करना नामुमकिन हो जाता है। अल्लाह ने सबको दिमाग दिया है, इसलिए हमारा कहना यह है कि देहात का मंसूबा दिल्ली न बनाये, देहात ही बनाये और दिल्ली सिर्फ उसे मदद करे। यही बात हमारी इस तहरीक की बुनियाद में है।

पुराने जमाने में एक व्यक्ति एक यूनिट था, आज एक ग्राम एक यूनिट रहेगा। पहले से बड़ा यूनिट रहेगा। इस समय सारे देश नजदीक आ गये हैं। ऐनक, फाउन्टेनपेन, लाउडस्पीकर आदि इस तरह की चीजें दुनियाभर से शहरों में आती हैं और दूसरी चीजें बाहर भेजी जाती हैं। यहाँ चीन और रूस नजदीक आया है, सात-आठ मिनट के फासले पर। आज हवाई जहाज से इधर-उधर जाने में कितना समय लगता है? इस तरह आज फासले टूट रहे हैं। जापान और अमेरिका को पहले पैसिफिक महासागर तोड़ता था, वही आज जोड़ता है। जहाँ समुन्दर जोड़ता है, वहाँ क्या हम दिलों को तोड़नेवाले बनेंगे? जहाँ कुदरत जोड़ रही है, वहाँ हम तोडनेवाले बनें तो क्या हम खुशहाल, सुखी रह सकेंगे? इसलिए रूहानियत और साइन्स दोनों का तकाजा है कि आप एक हो जायँ, इसीमें सबका भला है। ◆◆◆

संस्थाओं में सामुदायिक प्रार्थना का स्थान

प्रश्न: सामुदायिक जीवन में प्रार्थना के दो स्वरूप होते हैं, एक कर्ममय प्रार्थना, जहाँ जीवन का हरएक काम ईश्वर की आराधना के रूप में किया जाता है। ईसाई सन्त ब्रदर लोरेन्स के बारे में यह कहा जाता है कि वे समाज के लिए रसोई, सफाई आदि सब काम प्रार्थना के रूप में ही करते थे। प्रार्थना का दूसरा स्वरूप यह होता है कि समाज के सब सदस्य प्रतिदिन एक नियत समय पर ईश्वर की आराधना के लिए एकत्र होते हैं। किसी भी शिक्षण-संस्था में मेरे विचार में प्रार्थना का पहला स्वरूप सहायक होता है। हमारी शिक्षण-संस्था में समाज की रसोई, सफाई, शरीर-श्रम आदि सब प्रवृत्तियों में शिक्षक और विद्यार्थी सब नियमित रूप से भाग लें, यह अपेक्षा रहती है। इसी प्रकार संस्था की सामुदायिक प्रार्थना में भी शरीक होने की अपेक्षा रखना ठीक है कि नहीं?

उत्तर: संस्था में किसीकी भगवान पर श्रद्धा नहीं है तो भी भगवान के भक्तों पर तो श्रद्धा होती ही है। इसलिए भक्तों के साथ बैठने में उन्हें खुशी ही होनी चाहिए। मैं अगर नास्तिक हूँ और मुझे आपके साथ बैठने में ही उज्र हो तो मुझे वहाँ नहीं रहना चाहिए। समूह में हम अपेक्षा रख सकते हैं कि सब कोई प्रार्थना में आयें, लेकिन कोई नहीं आना चाहता है तो उसपर सोचना होगा। जिसमें कई सवाल आते हैं। एक मनुष्य को आप दूसरी सब तरह से मान्य करते हैं तो क्या केवल प्रर्थना के लिए जाने दिया जाय? लेकिन संस्था में विद्यार्थी और शिक्षक प्रार्थना में शरीक हों, यह अपेक्षा रखना ठीक है। ◆◆◆

अनुक्रम

१. रूहानियत मजहब के घेरे से बहुत दूर है
कुकरनाग २१ अगस्त '५९ पृष्ठ ६४७.
२. भूदान-तहरीक की जरूरत पूरी मानव जाति के लिए है
बनिहाल २४ अगस्त '५९ „ ६४९.

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी